शब्दकोष

सुना है की
रद्दी के भाव बिकते हैं,
शब्दकोष ये आजकल !

खो चुके हैं शायद
ये चरित्र और व्यक्तित्व अपना !
कुछ कीमत तो अपनी वरना
ये शब्द भी कायम रख पाते !

खुशी में अक्स बन बहे हैं जाते,
गम में कंठ ही में हैं फंस जाते,
इज़हार में जुबां पर गाँठ बन ये जाते !
छोटी-छोटी भावनाएं तक तो
ज़ाहिर नहीं कर हैं पाते, ये शब्द !

तारीफ़ में आकाल रूप हैं धारण कर जाते
आलोचना में बाड़ बन बहे हैं जाते !
कानो से जुबां तक के छोटे से सफर में
अपना रंग, रूप और लहजा ही बदल हैं जाते !

फीके पड़ते, मुरझाते हुए,
कदमों तले कुचले जाते हुए,
कुछ आश्चर्य नहीं, जो एक वेश्या की तरह
वक्त के साथ अपनी कीमत गिरती हैं पाते,
ये शब्द !

वक्त आ गया है शायद अब
एक नया शब्दकोष बनाने का !
जिसमे शब्द हों ऐसे
जो ना तोड़े-मोड़े जाएँ,
ना गलत इस्तेमाल हो पायें !
मज़बूत हों इतने की रिश्तों की
बुनियाद बन जाएँ,
कोमल हों इतने की दिल की
जुबां बन जाएँ !

वक्त के साथ सिर्फ बढ़े कीमत जिनकी,
होठों से निकलें यां कगाज़ पर उतरें,
शब्द ऐसे, जो अपनी कोख में छुपे अर्थ को
बेफिक्र, जन्म दे पायें !

आओ ! चलो ! हम सब मिल कर
एक नया शब्दकोष बनाएँ !

--- राजीव नंदा